

Gudi Padwa Puja

Date : 5th April 2000
Place : Noida
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

| | |
|---------|---------|
| Hindi | 02 - 11 |
| English | - |
| Marathi | - |

II Translation

| | |
|---------|---------|
| English | - |
| Hindi | - |
| Marathi | 12 - 13 |

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

अपने यहाँ हिन्दुस्तान में देवी के दो नवरात्र माने जाते हैं। ये चैत्र नवरात्र जिसमें आज का दिन जो शैल पुत्री के अवतरण का है। शैल पुत्री माने जब उन्होंने हिमालय में जन्म लिया था इसलिए उनको शैल पुत्री कहते हैं और फिर उसमें और भी उनके नाम हैं। लेकिन शैल पुत्री की विशेषता ये है कि उनका प्रथम जन्म शैल पुत्री के रूप है। तो हिमालय की उस ठण्ड में देवी का जन्म हुआ और जो कुछ भी उन्हें करना था वो वही—शैल पुत्री ने किया। लेकिन आगे की कहानी तो आपको मालूम ही है कि दक्ष ने जो हवन बनाया था, उसमें उन्होंने शिवजी को आमन्त्रण नहीं दिया ये शिवजी की पत्नी थीं। तो फिर देवी ने उनको सती कह दिया तब सती हुई थीं। उन्होंने जाकर के उस हवन कुण्ड में अग्नि में अपनी आहुति दे दी, तब शिवजी आए और उनके शरीर को उठाकर निकले। तो अनेक जगह उनके शरीर के टुकड़े गिर गए और उस जगह हम लोग मानते हैं कि देवी की शक्ति है, जैसे विंध्याचल में है हर जगह। तो उनकी शक्ति वहाँ विचरण करती है ऐसा कहते हैं। और वो जो शक्ति थी वो किसी भी चीज़ को

पवित्र कर देती थी। इतनी संहारक थी। ये जो सातवीं शक्ति है उसे संहारक शक्ति कहते हैं। उसके बाद संहारक शक्ति आई Right Side में चली गई इसी Right Side में सावित्री, गायत्री आदि हैं। पर संहारक शक्ति का जो प्रादुर्भाव हुआ मतलब एक दिशा Left में गई एक दिशा Right में गई और जो संहारक शक्ति है वो Centre में चली गई। उसमें आप देखते हैं कि देवी के अनेक रूप Heart चक्र में हैं, जैसे दुर्गा है और भी जो उनके रूप हैं जिससे उन्होंने संहार किया। वो हृदय पर विराजमान हैं। हृदय चक्र में, हमारे हृदय चक्र में वो विराजती हैं। तो इस हृदय चक्र की एक शक्ति तो ये है ही कि कोई आपको परेशान करे या आप पर आघात करे या आपको दुविधा में डाल दे तो वो जो शक्ति है, हृदय में, वो आपका Protection करेगी और जो आपको सताएगा उसका संहार करेगी। तो वहाँ पर सबसे जो शक्ति का प्रादुर्भाव है या सबसे ज्यादा इसका असर है वो है कुण्डलिनी का वहाँ पर आना। जब कुण्डलिनी हृदय चक्र पर आती है, क्योंकि कुण्डलिनी जगदम्बा शक्ति है, अम्बा, इसलिए जब वो आती है तब उसकी शक्ति और बढ़

जाती है। तो जब मनुष्य सहजयोग को प्राप्त होता है और ये शक्ति कुण्डलिनी के जागरण से उसके हृदय में स्थित होती है तो वो पूरी तरह से आपको सम्भालती है। आपका रक्षण करती है पूरी तरह से। आपका बाल भी नहीं बाँका हो सकता। पर उसको हृदय में रखना चाहिए। माँ को हृदय में रखना चाहिए। ये माँ की शक्ति है, मातृत्व की शक्ति। और मातृत्व शक्ति ऐसी है कि वो अपने बच्चों को हमेशा संरक्षित रखती है, हमेशा संरक्षण करती है। सो इसीलिए कि जब कभी हम लोग परेशान होते हैं तो Medical Terminology ने ऐसा कहा है कि यहाँ पर जो हड्डी है वो हिलने लग जाती है और उससे जो चारों तरफ फैले हुए हमारे Anti Bodies हैं, जिनको हमारी भाषा में तो हम गण कहेंगे, उन गणों को खबर आ जाती है और वो फौरन तैयार हो जाते हैं। तो गणों की भी वो महाराज्ञी हैं। उन्हीं के आधार पर, उन्हीं की आज्ञा पर वो चलते हैं। इन लोगों, में जैसे गणेश और देवी में कोई कभी भी झगड़ा होने का सवाल ही नहीं आता। वैमनस्य होने का सवाल ही नहीं आता। वो दोनों ही शक्ति मानों जैसे एकाकारिता। तो गणेश उनके बेटे हैं और वो उनकी माँ। तो जो लोग गणेश जी को मानते हैं और जिन्होंने प्राप्त किया है गणेश जी को सहज में भी उनको वो बिल्कुल अपने बच्चे जैसे सम्भालती हैं। पग-पग पर हर जगह उनको देखती हैं क्योंकि वो माँ हैं और आप गणेश हैं। पर आपके गणेश निर्मल

होने चाहिए। गर गणेश में गड़बड़ हैं तो फिर उनको सही करना चाहिए। इस प्रकार नाना-विध उनकी क्रियाएं हैं। पर आज की विशेषता ये है कि कहते हैं कि सर्वप्रथम उन्होंने शैल पुत्री के नाम से जन्म लिया और ये बात सत्य ही होगी। लेकिन उससे पहले जब आदिशक्ति इस संसार में आई तो एक गाय के रूप में उन्होंने जन्म लिया। मतलब परम चैतन्य की जो बस्ती है उसमें उन्होंने अवतरण लिया और वहाँ एक गाय बनकर रहीं। खास बात ये है कि वहाँ गोकुल पहले बना और वहाँ ये गाय रही। हरेक चीज़ पहले बनी और उसका प्रतिबिम्ब (Reflection) हमारे अन्दर है, जैसे सदाशिव हुए तो उनसे शिव बन गए। सबके ऐसे Reflections आए हैं, उसी प्रकार देवी का भी है। सो देवी का प्रादुर्भाव जो हुआ वो तो पहले जब जन्म लिया मनुष्य रूप में तो शैल पुत्री है। इसलिए आज का बड़ा महात्म्य है। लेकिन उस दशा में, जहाँ पर मैं बता रही हूँ, जिसको कि आप कहते हैं परम चैतन्य कि जो व्यवस्था है, स्वर्ग कहिए, चाहे जो भी कहिए उसमें उन्होंने आदिशक्ति के नाम से जन्म लिया और वो एक गाय के स्वरूप में थीं। इसलिए हम लोग गाय को नहीं मारते क्योंकि वो माँ हैं। यहाँ कि गाय में और विदेश की गाय में बहुत फर्क है। इनकी शक्ल और होती है, उनकी बिल्कुल अलग होती है। मुझे याद है मेरी लड़कियाँ छोटी थी। ये Grand Daughters, तो पूछती थीं कि नानी यहाँ की भैंसें सफेद

क्यों हैं? तो भैंस के और गाय के Expression में कोई फर्क ही नहीं है, तो लगेंगी कैसी? अब ये आदिशक्ति के जन्म लेने का समय नहीं था क्योंकि पहले आप जानते हैं कि द्वापर, त्रेता आदि होते गया। वो कलियुग में ही उनको आना था क्योंकि सारे ही चक्रों को लेकर, सारी ही देवियों को लेकर, सारी ही शक्तियों को लेकर के कलियुग में आना पड़ा। नहीं तो कार्य नहीं होता। इतना घोर कलियुग है। इस घोर कलियुग में कार्य करना बड़ा कठिन है और उसने महामाया स्वरूप लिया क्योंकि घोर कलियुग में यदि कोई जाने कि ये आदिशक्ति हैं तो ऐसे ही मारने को दौड़े। इसलिए महामाया बन गई और पहले का जो स्वरूप था तो वो इस तरह महामाया स्वरूप नहीं था। वो पूरा-पूरा प्रचण्ड था क्योंकि इन दिनों में ऐसी कोई बात नहीं थी कि देवी को कोई मार डालेगा। वो जमाना और था, और वो भी उनका जन्म जो हुआ हिमालय की गोद में हुआ और उसके बाद विवाह शिव जैसे महान शक्तिशाली के साथ। तो बहुत बार लोगों को ये प्रश्न होता है कि एक नवरात्र ये है एक नवरात्र वो।

एक देवी के लिए कहते हैं कि महाकाली है, महासरस्वती सब हैं लेकिन सब आदिशक्ति के ही अंग-प्रत्यंग हैं। इनका जो प्रादुर्भाव हुआ वो भी ऐसे ही समय में हुआ कि जिस कार्य को करना था, जैसे अब आपके मेरठ में

शाकाम्भरी देवी का प्रादुर्भाव हुआ। उनमें ये शक्ति थी कि वो उपज को बढ़ाती थीं। हम भी मेरठ में थे तो हमने भी बहुत वहाँ खेती बाड़ी करी। तो इतने बड़े-बड़े बैंगन आप खा नहीं सकते! ये बड़े-बड़े टमाटर और ककड़ियाँ, इतनी मोटी इतनी लम्बी कुछ समझ में भी नहीं आता था लोगों को कि ये क्या है! हमें तो पाँच या छः Prizes मिले वहाँ! वो शाकाम्भरी देवी की शक्ति है। तो जहाँ जिस शक्ति का प्रादुर्भाव होता है वहाँ ये शक्ति जो भी हो वही कार्य में ज्यादा रत होती है। अब लोग कभी चामुण्डा कहेंगे कभी कुछ कहेंगे तो उसमें सबको Confusion होता था। लेकिन शक्ति के अनेक स्वरूप हैं और जिस चीज़ की ज़रूरत होती है उनको इस्तेमाल करती हैं। तो ऐसे कोई नहीं है कि दुर्गा हैं तो फिर ये चामुण्डा कौन हैं? ऐसी बात नहीं है, ये सब हैं और इनका होना ज़रूरी है। अलग-अलग देवता हैं जिस प्रकार कार्य करते हैं, इसी प्रकार देवी को भी शक्ति स्वरूपा माना है। देवी के बगैर कोई भी अवतरण कुछ नहीं कार्य कर सकता चाहे वो गुरु हो चाहे वो रामवतार हो या कृष्णवतार हो, क्राइस्ट हो, कोई हो। सबके पीछे में एक देवी की शक्ति होती थी। इसलिए हमारे देश में माँ को इतना मानते हैं लोग।

अब चलिए ऐसा कहना चाहिए भारतीय जो हैं शक्ति के पुजारी हैं। बाकी ऐसे ही जो चीज़ें बढ़ चली, झगड़े झगड़ू सब लोग करते

हुए, पर वास्तव में सब लोग शक्ति पुजारी हैं। जो विष्णु को मानते हैं वो भी शक्ति पुजारी हैं, जो शिव को मानते हैं वो भी शक्ति पुजारी हैं क्योंकि माँ-माँ को तो कोई नहीं बाँट सकता। तो ये ऐसी बड़ी भारी संस्था माँ की अपने देश में है और इसलिए हमें उसका बड़ा आदर करना चाहिए। बड़े लोगों को भी करना चाहिए और बच्चों को भी। अभी तक हमारे देश की औरतें इतनी बिगड़ी नहीं हैं पर वो समझती नहीं हैं कि माँ बनने के लिए कौन से, कौन से ऐसे गुण होने चाहिए, जिससे अलंकृत हों और उसी से अच्छे बच्चे बनें। अब आजकल क्योंकि जरा औरतों में और चक्कर चल पड़े हैं तो उनको बच्चे ही नहीं होते। क्योंकि ऐसी औरतों को क्यों बच्चे होंगे और जैसे दूसरे देश हैं जहाँ माताएं ठीक नहीं हैं तो वहाँ बच्चे ही पैदा नहीं होते। जर्मनी में माइनस है, अमरीका में माइनस है, गोरे लोग माइनस हैं। सब जगह ये क्यों माइनस हैं? क्योंकि इन लोगों में मातृत्व नहीं है। अब धीरे-धीरे समझ रहे हैं इस बात को। मातृत्व न होने से बच्चे क्यों पैदा होंगे? वो तो ऐसी जगह पैदा होंगे जहाँ प्यार मिले, उन्हें कोई संवारे।

लेकिन उसी के साथ-साथ मैं सोचती हूँ कि हिन्दुस्तान के आदमियों को औरत की इज्जत करनी है और उसको प्यार करना है। ये बहुत जरूरी है क्योंकि आप लोगों को थोड़े दिन में ये हो सकता है कि भारतवर्ष

को लोग आध्यात्म का चरम लक्ष्य समझें। सब कुछ समझें पर यहाँ की जो औरतों की स्थिति है, खासकर उत्तर हिन्दुस्तान में, वो बहुत दुखदायी है। औरत की इज्जत करना, माने महापाप, उसको मारना पीटना ये तो चलता ही रहता है। Dowry System, फिर अनेक तरीकों से आदमी अपने को उससे ऊँचा बड़ा दिखाना चाहता है। वो है नहीं। आदमी जिस चीज़ में है उसमें है लेकिन औरत सम उसके अन्दर क्षमता नहीं। उसके अन्दर वो शक्ति नहीं। बच्चा नहीं पैदा कर सकता। जो औरत की इज्जत नहीं करते वो देश भी नष्ट हो जाते हैं और जो माँ की इज्जत नहीं करते वो भी देश नष्ट हो जाते हैं क्योंकि शक्ति ही खत्म हो गई। तो ये नहीं होना चाहिए कि औरतों के पीछे भाग रहे हैं, औरत का Nomination कर रहे हैं। Equal हम लोग हैं पर Similar नहीं, अलग-अलग हैं। अपनी व्यवस्था अलग है और उसकी अलग है। पर जो मैंने देखा है North India में बहुत ही बुरी हालत औरतों की है। उनको कोई मानता ही नहीं। मैंने खुद ये देखा है कि औरत की कोई इज्जत नहीं और हर तरह से उसको परेशान किया जाता है। सो ये इसको बदलने का हम सोच रहे हैं। काफी प्रयत्न करना चाहिए। ये दूसरा सृजन का कार्य है किसी का नाश करने का नहीं, सृजन का कार्य है। अगर ये हो जाए, ये सृजन का कार्य बन जाए तो हमारी भारत भूमि जो है शस्य श्यामलाम् हो जाए। हमें

इसके लिए कायदे कानून बनाने की ज़रूरत नहीं, अन्दर से ही हमें ये समझना चाहिए। स्त्री जो है ये देवी के ही लक्षण में है। अब वो अगर कुछ खराब हो तो दूसरी बात है। पर स्त्री एक देवी है और उसकी इज्जत करना, उसको सम्भालना और उसको हर तरह मदद करना, ये हरेक पुरुष का कर्तव्य है। पर ऐसे होता नहीं है। पुरुष हमेशा ऊपर में जमा रहता है। हरेक मामले में। उसके पास बुद्धि ज्यादा होती है पर हृदय तो स्त्री के पास होता है। इसलिए कोशिश ये करनी चाहिए कि स्त्री का मान रखा जाए। स्त्री को भी समझना चाहिए कि जब तक वो देवी स्वरूप है तब तक ठीक है पर वो गर और कुछ हो जाती है तो उसका क्यों मान किया जाए? इसलिए उसमें भी ये गुण विशेष आने चाहिए और उसमें भी ये बात आनी चाहिए। गर किसी स्त्री में ये गुण नहीं है तो उसको आप छोड़ दीजिए। उसको आप अलग हटा दीजिए। पर जिसमें हैं उससे ठीक बर्ताव करें। अधिकतर क्या देखा जाता है कि जो ज़बरदस्त औरतें हैं उनकी पूजा होती है और जो बेचारी अच्छी हैं उनको लोग लताड़ते हैं। तो अपने को अपने जो अच्छे सहज आदर्श हैं एक अच्छे पति पत्नी बनना चाहिए और आपस में बहुत प्रेम और आपस में बहुत understandings होनी चाहिए। तभी सहजयोग असली फलेगा, नहीं तो नहीं फल सकता।

इस तरह से देवी के अनेक स्वरूप हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं और वो सब बिल्कुल सही हैं। उनमें कोई त्रुटियाँ नहीं है, गलती नहीं है। पर इसकी गहनता समझने के लिए सहज में उतरना पड़ेगा। वो vibration से आपको पता लगेगा और उसमें discrimination आप देखेंगे कि हरेक शक्ति के अलग vibration हैं। ये बड़ी सूक्ष्म बात है, इसलिए ये जितनी आपकी प्रगति होगी उतनी ही आप समझ पाएंगे। उसका मतलब नहीं कि अब आप उसी में लगे रहिए, मतलब ये है कि आप सिर्फ ध्यान धारणा से अपनी गर शक्ति बढ़ाएं और अपने को उस स्तर पर उतार लें तो आप खुद ही समझ जाएंगे। इंसान को देखते ही आप समझ जाएंगे कि ये कैसा आदमी है। एकदम वो ज्ञान, एकदम आ जाएगा क्योंकि हम ज्ञानवादी हैं और हमारी नसों में ज्ञान आ गया है। तो ये सब पता हो जाएगा। पर उसके लिए ध्यान करना बहुत ज़रूरी है और कोई इसका मार्ग नहीं है कि आप बड़े पूजन करिए भजन करिए और ये करिए। कुछ नहीं, ध्यान करना चाहिए और उसके साथ ही साथ Introspection। मैं क्यों कर रही हूँ, इसे मैं ऐसे क्यों कर रहा हूँ? मुझे ऐसे क्या करना है? अपने ऊपर ध्यान होना चाहिए, दूसरे का नहीं क्योंकि उसका कोई फायदा नहीं होने वाला। अपने तो अपने को ठीक करना है, तभी दूसरे की आप त्रुटि ठीक कर सकते हैं। तो अपने ऊपर ध्यान होना चाहिए कि मैं क्या कर रहा

हूँ, ऐसे क्यों सोच रहा हूँ, मेरे दिमाग में ऐसी बातें क्यों आती हैं? अपनी तरफ ध्यान होना चाहिए और दूसरे की तरफ प्रेम दृष्टि होनी चाहिए। प्रेम की दृष्टि कि मैं तो प्रेम में बैठा हूँ और अन्दर मेरे क्या प्रेम हो रहा है सबके लिए? मैं सबको प्रेम दृष्टि से देखता हूँ? मैं सबको माफ कर देता हूँ? इस तरह से दो चीज़ा हैं— एक तो ध्यान और एक आत्मावलोकन, जिसे कहते हैं। तो ये दो चीज़ों से मनुष्य की प्रगति होती है। माने एक तो ध्यान वो तो बात सही है कि ध्यान से आप अपने अन्दर और चैतन्य अन्दर लेकर के और बढ़ते हैं, और अपने अवलोकन से अपने introspection से भी आप अपने अन्दर के जो obstacles हैं उनको निकाल देते हैं। जैसे एक नदी का प्रवाह बह रहा है, अब उसके अन्दर बहुत से पत्थर हैं, कुछ हैं, तो प्रवाह ठीक से बह नहीं सकता। गर वो पत्थर क्या हैं आप देखते हैं और निकाल लें तो कुण्डलिनी का प्रवाह बिल्कुल बड़े जोरों में बह सकता है और बहेगा। इसके बाद यही बात है। आप स्वयं ही इसको महसूस करेंगे। इसकी प्रचीती होगी कि आप एकदम स्वच्छ हो गए, अब कुछ रहा नहीं आपमें, एक दम स्वच्छ हो गए। वो चीज़ अन्दर से आने से उसमें एक तरह से मैं कहती हूँ ध्यान तो आप लोग करते हैं, ये मुझे मालूम है, लेकिन introspection अपने बारे में सोचना चाहिए। उसमें आलोचना करने की जरूरत नहीं अपनी, लेकिन उसको साक्षी भाव से

देखना है और दूसरे ये कि कहाँ तक मैं प्रेम करता हूँ? कहाँ तक मैं शुद्ध हूँ? कहाँ तक मैं अहंकार से बचा हूँ? ये अगर आप देखने लग जाएं तो धीरे-धीरे सभी दोष भाग जाएंगे, जैसे अगर कोई दुष्ट आदमी समझ लीजिए आपके घर में आए आपकी उसके ऊपर नजर पड़ी तो वो भाग जाएगा कि नहीं? उसी प्रकार ये जो बैठे हैं घुसपैठ करने वाले, ये सब भाग जाएंगे यदि आप introspection करें। पर अगर आप अहंकार में, 'मैं तो ठीक हूँ मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ' ऐसे चले तो यही सफाई करने की जरूरत है। यही निर्मलता, यही स्वच्छता अन्दर आने की जरूरत है और कुण्डलिनी तो अपना कार्य कर ही रही है, वही आपको छुड़ाएगी। ये तो कोई कह नहीं सकता कि हम छुड़ाएंगे लेकिन आपकी दृष्टि पड़ते ही आपकी वो जो बातें हैं दौड़ जाएगी। अब किसी को थोड़ी-थोड़ी लोलुपता होती है जैसे सत्ता मिल गई फिर भी रुके नहीं। तो चाहते हैं फिर और कोई सत्ता मिले। फिर उसके पीछे दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं— इसका कोई अन्त नहीं होता। और गर ये चीज आपके नजर में आ जाए कि मैं तो पागलों के जैसे दौड़ रहा हूँ, ये सत्ता के पीछे में, इसमें क्या है? बेकार है। शान्ति से बैठे जो मिलता है उसका उपभोग हो। अब दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं। जो मिला है उसको भी नहीं भोग रहे, उसका भी नहीं आनन्द उठाया और दूसरे के पीछे भागे और दूसरे के पीछे।

जब ये दशा आ जाएगी जिसको मैं सहजावस्था कहती हूँ तो सहजावस्था में सारी दैवी शक्तियाँ जितनी हैं आपके चरणों में आ जाएंगी। आपको सम्भालेगी, आपको गाइड करेंगी, आपको वरदान देंगी। सारी चीज़ें आ जाएंगी। पर सहजावस्था आनी चाहिए। उसमें मैं ये करने वाला हूँ, मुझे करना चाहिए मुझे ये करना है, वो करना है, ये जब शुरू रहता है तो मैं कहती हूँ कि अभी सहजावस्था नहीं है। और जब सहजावस्था आई तो जैसे छोटा एक बच्चा पालने में पल जाए ऐसे ही माँ की शक्ति के स्वरूप में वो बैठा है और ये जितनी भी शक्तियों का वर्णन है वो सारी शक्तियाँ हर पल हर तरह से मदद करेंगी। जिसकी जो ज़रूरत होती है वो पूरी करती है हरेक शक्ति में कोई न कोई ऐसी विशेषता है और इसलिए शक्ति की हम लोग पूजा करते हैं और उसको मानते हैं। किसी भी अवतरण से ज्यादा हम शक्ति को मानते हैं, सब लोग। उसका कारण ये है कि शक्ति ही हमको अवतरण की ओर अग्रसर करती है, उसी की दृष्टि से हम अवतरण को पहचान सकते हैं नहीं तो हम पहचान नहीं सकते। इसलिए शक्ति ही है, आपकी गुरु शक्ति ही आपकी माता है और शक्ति ही आपकी अगुआ है। इसलिए और किसी को मानने की ज़रूरत नहीं। जब एक बार शक्ति को आपने मान लिया तो शक्ति सबको मनवा लेगी, सबको समझा देगी। और अब आपने सहज में देखा है अब आप लोग सब हमें तो

मानते ही हैं ठीक है। लेकिन हम आपको मनवाते हैं और लोगों को, इनको भी मानो, उनको भी मानो उनको भी मानो। लेकिन गर हमें न मानते होते, किसी भी अवतरण को मानते होते, क्राइस्ट को ले लें, तो उन्होंने कहा तो है कि हम आपके पास भेज देंगे ऐसा एक अवतार, और ऐसी आदिशक्ति आएंगी (Holy Ghost Would come) आखिर गर वो अपना कार्य पूरा कर गए होते तो काहे को कष्ट उठाते। मोहम्मद साहब ने भी कहा, सबने ये क्यों कहा कि उद्धारण संसार का होने वाला है। मानो उन्होंने भविष्य की बात करी, इसका मतलब ये होता है, सीधा-सीधा, कि उन्होंने जो भविष्यवाणी कही वो इसलिए कि वो जानते थे कि अभी समय नहीं आया है कि इनको हम पूर्णता में ले जाएं, पूर्ण में ले जाएं और उनकी पूर्णता आने के लिए स्थिति आने वाली है, ये कह देने से, ये बता देने से कि आपकी ऐसी स्थिति आने वाली है। कोई न कोई ऐसे आने वाले हैं और उसके लिए आप सिर्फ अपना जो चित्त है साफ रखें और परमात्मा को याद करें रस्ता बता देते हैं। लेकिन किसी ने सामूहिक चेतना नहीं दी। चेतना भी बहुत कम लोगों को है। जिसकी वजह से वो चीज़ अब आप लोगों ने प्राप्त की है। अब आपको तो बहुत जोरों में इसमें प्रगति करनी चाहिए। बस दो ही चीज़ तो करनी है, एक तो ये कि ध्यान करना है और एक introspection और उसमें तीसरी चीज़ जो है जब आपको जो उसमें होगा

मतलब सौन्दर्य दृष्टि आ जाएगी। हरेक आदमी की सुन्दरता दिखाई देगी, उसकी अच्छाई दिखाई देगी। कितना भी आदमी आपसे दुष्टता से व्यवहार करे तो समझ में आएगा नहीं। इनमें ये बात जरूरी थी। ये सीखने की बात है। तो आपकी नज़र बुराई से उठकर के अच्छाई पर जाएगी और जब अच्छाई पर जाएगी तो आप अच्छाई अपनाएंगे। लेकिन आपकी बुराई पर नज़र रहेगी तो आप कैसे अच्छाई अपना सकते हैं? इसलिए ये जो स्थिति है जिसमें कि आप, मैंने कहा कि आप, अपने को भी आत्मनिरीक्षण करें। गर आपमें सुन्दरता है तो आपको अपने ही से आनन्द आएगा। गर आप दूसरों में देख रहे हैं तो और आनन्द आएगा। तो सुन्दरता ही देखने के लिए है। आदमी की अच्छाई देखनी चाहिए और उसमें फिर आपको आश्चर्य होगा कि हरेक आदमी में कोई न कोई खूबी तो है ही। लेकिन उसका मज़ा कोई नहीं उठा सकता। अब जैसे एक फूल है। फूल के अन्दर सुगन्ध है। लेकिन गर आपके पास नाक ही नहीं हो तो आप सुगन्ध कैसे लेंगे? ऐसी बात कि आपके अन्दर वो हृदय होना चाहिए जो उस प्यार को, उस महत्ता को, उस बड़प्पन को समझ सके और उसको आप अपनाइए। तो जितना वो आदमी अपने को नहीं आनन्दित कर सकता आप कर सकते हैं। उसमें जो छिपा हुआ है उसको आप जान सकते हैं और उसका आनन्द उठा सकते हैं। सो दूसरों से

आनन्द उठाना सीखना ये शक्ति का ही काम है। शक्ति आनन्द में ही है, आनन्ददायी है और जब ये आनन्द आने लगेगा तब आप देखिएगा कि आप समझ जाएंगे कि अब तो हम हो गए सहज। तो ये सहजावस्था है कि दृष्टि ही आपकी गलत चीज़ों पर नहीं जाएगी। क्या फायदा? क्योंकि आपको कुछ सीधा संहार नहीं करना है, वो तो देवी का काम है, आपको नहीं करना है। तो सारी दुनिया का जो आनन्द अलग-अलग जगह छिपा हुआ है उसका आँकलन, उसका उपभोग लेना आपके नसीब में है। इसलिए आज के दिन, क्योंकि आज मैंने बताया पहला दिन है, उनका शैल पुत्री का और उन शैल पुत्री का मतलब ये भी होता है कि उनकी अवलोकन शक्ति, क्योंकि हिमालय में पैदा हुई। हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है और वहाँ से सारी दुनिया का अवलोकन, मतलब उनकी दृष्टि सब पर पड़ने दीजिए। पहले शैल-पुत्री का दिन वो सब देख लें है क्या? छोटे बच्चों को भी देखिए, सबको देखते हैं ये कौन हैं? वो कौन है? वो कौन है? उसी तरह शैल पुत्री का कार्य है और उस पर से और भी नाम है। शैलजा। ये वो हैं। पर जो अपने यहाँ ग्रन्थों में माना जाता है नवरात्रि जो चैत्र की नवरात्रि है उसमें जो पहले देवी का अवतरण हुआ वो हैं शैल पुत्री। हर जगह चैत्र की, जिसको बहुत मानते हैं, जैसे बिहार में आपके यहाँ छठ होती है षष्ठी के दिन। षष्ठी के दिन वहाँ होती है छठ। वो ये इस दिन में से है।

अब गायत्री मंत्र भी बहुत Right Sided आदमी को नहीं कहना चाहिए क्योंकि Right side की Powers उनको तनाव की ओर ले जाती है। उससे अच्छा Left side के मंत्र कहें जो बहुत Right sided हैं। जो Left sided है वो right side के मंत्र कहें। इस तरह से Balance आ जाएगा। तो मतलब, ये समय आनन्द-विभोर होने का है। इतना बड़ा महत्वपूर्ण समय है और हमारा भी जन्म ऐसे ही समय में हुआ था। कमाल तो ये है कि इसके बाद, हमारे जन्म के बाद नवरात्र भी यहीं से शुरू हुए थे और हमारे जन्म के बाद ही नवरात्र शुरू हुए थे। सो इसके बड़े कमाल के combinations हैं। तो 21 मार्च के बाद ही नवरात्र आता है उससे पहले नहीं। इस प्रकार इस चैत्र की जो है बड़ी कमाल है और अपने यहाँ चैत्र वगैरा ऐसे गाने भी होते हैं। उसका एक ढंग होता है गाने का, चैती गाना। क्योंकि क्या है कि पहले के साधु सन्तों ने कवियों ने और बहुत सारे गायकों ने जब चैत्र की वो खुशियों को पाया तो वो स्वर में बंध गया तो वो गाना शुरू हो गया। चैत्र का आनन्द जो है कि गाँवों में बहुत मानते हैं चैत्र को। उस वक्त जो गाने आप सुनिए ऐसा लगता है कि अन्दर से उन्माद है, उत्साह और बहुत प्यार और आनन्द का उसमें अभिभाव है। तो वो इन देहाती औरतों में कहाँ से आया? देहात के लोगों में कैसे आया? वो इतनी सुन्दर कविताएं लिखते हैं, इतनी सुन्दर कि वो कहाँ से आया? वो ये ही

कि वो सरल हृदय लोग थे। तो वो यही चीज़ देखते थे, इसको ही प्राप्त करते थे और प्राप्त किया। उनके हृदय में शक्ति थी ग्रहण करने की। अब हम लोग जरा बंट गए हैं। Right sided हो गए हैं। तो भी सहजावस्था प्राप्त होनी चाहिए। सहजावस्था का जो आनन्द है उतना उनको नहीं आनन्द आया होगा जितना वो आपको आएगा चैती के गाने सुन के। बड़ा आनन्द आएगा, इतना उनको नहीं आएगा। हो सकता है उनमें इतनी आकलन शक्ति नहीं पर आप लोग बड़े आनन्द से उसको सुन सकते हैं। तो ये बड़ा विशेष है और सबसे विशेष ये है कि विक्रमादित्य ने जब उसे स्वीकार किया तो इसी को ये जो है तृतीया, इसी को उसने माना, कि इसी से शुरू करना है। माने एक तारीख, ये इसको अक्षय तृतीया ही नाम रख दिया। अक्षय तृतीया से ही उन्होंने अपने शुरू करे कलैण्डर। वैसे ही शालिवाहन ने जो संवत्सर बनाया, वो भी इसी तारीख से। आखिर उन्होंने और इन्होंने भी, इनकी तारीख एक जो है दोनों की। आश्चर्य की बात है क्योंकि इसमें विक्रमादित्य का राज्य था उसमें उन्होंने शालिवाहन ने Attack किया। उनको हराया वो तो ब्रुवाहन उनके मतलब शालीवाहन शायद उनको हराया और उसके बाद उन्होंने बनाया ये शालीवाहन का शक और इस शालीवाहन के शक की जो पहली तारीख है वो भी अक्षय तृतीया है और उनकी भी जो पहली तारीख है वो भी अक्षय तृतीया

है। बड़े आश्चर्य की बात है। और मुसलमानों का जो हिजरी होता है न वो भी यही है। first यही है वो। सबने इसी तारीख को माना first और पारसी भी नवरोज़ कहते थे। कारण क्या? कारण ये कि एक ही शक्ति से प्रेरित लोग थे। तो उन्होंने इसी दिन को माना। ये बहुत महत्वपूर्ण है और इस दिन जो भी कार्य करो वो सफल हो जाता है और खास कर लोग कुछ गर विशेष कार्य करना है तो उसको आज के दिन करते हैं क्योंकि आज का दिन सबसे ज्यादा, सबसे ज्यादा पुण्य Auspicious दिन है। तो बड़ी खुशी की बात है कि आप सब लोग आए यहाँ और इसके बारे में हम लोगों ने इतना जाना।

तो आज हम लोगों को अपने अन्दर यही निश्चय कर लेना चाहिए कि हम लोग रोज़ ध्यान करेंगे और उसी के साथ introspection। जब सोचेंगे तो अपने ही बारे में दूसरे के बारे में नहीं। अपने बारे में सोचेंगे और फिर उसको किस तरह से मधुरता से हम अपना जीवन बिता देते हैं। बात करने में, किसी से व्यवहार में हम उसको किस तरह से मधुरता से हम अपने विचारों को प्रकट करें। ये सब सीखना चाहिए। जिससे हम किसी को दुख नहीं दे सके, जिससे तकलीफ़ न हो। उल्टे ही जो कुछ कहना है वो कहो। कभी-कभी ज़रूर कहना पड़ता है जोरों में, पर अधिकतर जिससे आप कह रहे हैं उसको ये हमेशा एहसास होना चाहिए कि ये प्यार में कहा जा रहा है। तो उस प्यार में ही आपको बोलना चाहिए तो वो किस तरह

से कहा जाए? अब मेरे लिए तो रोज़ ही प्रश्न है कि अब वो आ रहे हैं तो उनसे क्या कहेंगे? वो आ रहे हैं तो उनसे क्या कहेंगे? इनको कैसे समझाएंगे? लेकिन ये शक्ति जो है प्यार की, ये जब हम देखते हैं चारों तरफ प्यार ही प्यार, आनन्द में है इस सबमें देखते हैं हर जगह प्यार ही प्यार है। तो वो प्यार हमारे अन्दर समा जाता है। ये आदान प्रदान से है और फिर उसके बाद उस प्यार से ही आप सबसे बात करें। सहजयोगियों को चाहिए किसी पर बिगड़ें नहीं, किसी से नाराज़ नहीं हों, वो मेरे पर छोड़ दें। शान्ति पूर्वक सब से मिलो एकदम सात्विकता आपके अन्दर आनी चाहिए लोगों को समझना चाहिए कि आप बहुत सात्विक हैं और आपके अन्दर कोई घृणा क्रोध आदि नहीं। तब लोग समझेंगे ये बहुत जरूरी है। अब तो आप लोग पार हो गए, सब कुछ हो गया। अब जो आगे का कार्य है उसके लिए जैसा व्यक्तित्व चाहिए वो मैं बता रही हूँ। आशा है आप लोग इस चीज़ का अनुसरण करेंगे और इसको अपने अन्दर की जो Introspection है उसको प्रेम से, अपने को भी प्रेम से देखना चाहिए, hatred से नहीं और फिर आपको समझ में आ जाएगा कि अरे मैं क्यों मैं ये कर रहा हूँ? जाने दो, छोड़ो। इस तरह से आदमी में एक सात्विकता आ जाएगी। आदमी बड़े सात्विक हो जाएंगे। इसी प्रकार से सहजयोग बहुत सुन्दर हो जाएगा और मेरा जो ये स्वप्न है कि सारी दुनिया में इतने सहजयोगी हो जाएं कि दुनिया ही बदल जाए। तो अनन्त आशीर्वाद

सबको अनन्त आशीर्वाद

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

सारांश (Excerpt)

भारतामध्ये दोन नवरात्र मानले जातात. आजचा या चैत्र-नवरात्रीचा पहिला दिवस महत्वाचा मानला जातो कारण या दिवशी देवीने "शैलपुत्री" नावाने पहिला जन्म हिमालयाच्या उत्तुंग पर्वतात घेतला. म्हणूनच तिला "शैलपुत्री" असे नाव पडले. तिचे कार्य त्या क्षेत्रातच होते. कथा अशी सांगतात की दक्ष राजाने केलेल्या हवनासाठी शिवांना न बोलवल्यामुळे तिने तेथे जाऊन अग्निकुंडात समर्पण करून घेतले; त्यानंतर शिव तिच्या मृत शरीराला घेऊन जात असतांना तिच्या शरीराचे तुकडे ठिकठिकाणी पडले व त्या त्या ठिकाणी तिची शक्ति प्रस्थापित झाली. उदा. विंध्याचल. त्यानंतर संहारक शक्तीचे अवतरण झाले; काही शक्ति डाव्या बाजूवर तर काही उजव्या बाजूवर (गायत्री, सावित्री) निर्माण केल्या गेल्या पण संहारक शक्ति मध्यावर आहे. दुर्गामाता स्वरूपात हृदयचक्रावर तिची स्थापना झाली. संहारक शक्तीचे कार्य म्हणजे जे लोक दुसऱ्यांना त्रास देतात, त्यांच्यावर आघात करतात किंवा संकटात टाकतात अशांचा संहार करणे व सज्जनांचे संरक्षण करणे. संहारक शक्तीचा प्रादुर्भाव कुण्डलिनीमुळे दिसून येतो, म्हणजे कुण्डलिनी जेव्हा हृदयचक्रावर प्रस्थापित होते तेव्हा दुर्गाशक्ती प्रभावित होते व तीच तुमचा सर्वतोपरी सांभाळ करते. ही एकप्रकारे मातृत्व-शक्ती आहे व मातेप्रमाणे ती तुमचा सांभाळ करते; तुमचे संरक्षण करणाऱ्या गणांना तीच आज्ञा करते व ते कार्याला लागतात. त्या गणांचा अधिपति श्रीगणेश व ते आपल्या मातेबरोबर पूर्णपणे

निगडित असतात व गणेश-चक्रालाही ही देवीच ठीक ठेवते.

शैलपुत्रीच्या आधी आदिशक्तीचे गाय-स्वरूपात अवतरण झाले. म्हणूनच गाईला इथे पवित्र मानतात. पण आदिशक्तीचे मनुष्य रूपात कलियुगातच अवतरण झाले, कारण ती काळाची गरज होती. आधीच्या द्वापार, त्रेता इ. युगांमध्ये त्याची गरज नव्हती. पण घोर कलियुगात संपूर्ण मानवजातीच्या उद्धाराचे महान कार्य होणार असल्यामुळे तिला सर्व चक्रे, सर्व शक्ति व सर्व देवता बरोबर घेऊन यावे लागले. त्याशिवाय हे कार्य होण्यासारखे नव्हते आणि त्याचबरोबर तिला महामाया-रूप धारण करावे लागले. तसे देवीने महाकाली, महासरस्वती, दुर्गा, शाकंभरा देवी अशी अनेक रूपे कालानुरूप धारण केली पण महामाया स्वरूपात या सर्व शक्ति तिचे. अंगप्रत्यंग म्हणून होत्याच. तसे प्रत्येक अवतरणाच्या पाठीशी देवीचीच शक्ति होती. वेगवेगळ्या स्वरूपात आपल्याकडे जी पूजा केली जाते त्या सर्वांचा अर्थ शक्तिपूजा हाच असतो.

शक्ति माता-स्वरूप असल्यामुळे आपल्या संस्कृती मध्ये मातेला आदराचे स्थान आहे. आपल्याकडील स्त्रियांचे मातृत्व अजून फारसे बिघडलेले नाही; पण खऱ्या अर्थाने मातृत्व जोपासण्यासाठी कोणते गुण अंगी बाळगले पाहिजेत हे त्यांनी नीट समजून घेतले पाहिजे; त्या गुणांनी अलंकृत असे व्यक्तिमत्त्व त्यांचे झाले पाहिजे. तरच

त्यांच्या पोटी येणारी संतान चांगली चिपजेल. म्हणून स्त्रीचा मान राखणे, तिला प्रेमाने वागवणे या गोष्टींना महत्त्व आहे. उत्तर भारतातील स्त्रियांची अवस्था फार वाईट आहे, मानसिक व शारीरिक छळ, हुंड्यावरून मारहाण इ. फार वाईट प्रकार बरेच चालतात. ज्या देशात महिलांना चांगली वागणूक दिली जात नाही ते देश लयास जाणार आहेत. हे सर्व बदलण्याचे महान कार्य आपल्याला करायचे आहे; हे सृजनकार्य यशस्वी झाले तर भारत पुन्हा एकदा सशय-शामलाम् बनेल. त्यासाठी कायदे-कानून करण्याची गरज नाही; ते आत्मघेच घटित झाले पाहिजे. स्त्रीला सांभाळणे, मदत करणे हे प्रत्येक पुरुषाचे कर्तव्य आहे. तसेच स्त्रियांनी पण आत्मसन्मान राखून आपली शक्ति जोपासली पाहिजे. पुरुषाजवळ बुद्धि आहे तर स्त्रीजवळ हृदय आहे. म्हणून पती-पत्नीमध्ये प्रेम असेल, समजूतदारपणा असेल तर सहजयोग खूप पसरेल.

शास्त्र-पुराणात वर्णन केलेले अनेक देवी-अवतार हे खरे आहेत; त्यांची गहनता समजून घेतली पाहिजे. व्हायब्रेशनवरून हे सर्व तुम्हाला समजेल. हे सर्व सूक्ष्मातील ज्ञान आहे व ते तुमच्या नसा-नसामधून प्रवाहित झाले पाहिजे. त्यासाठी ध्यान करून तुम्ही ही शक्ति सतत वाढवली पाहिजे. नजरेसमोर आलेला माणूस एका दृष्टिक्षेपात समजेल इतकी स्थिति मिळवली पाहिजे. त्यासाठी ध्यान व आत्मपरीक्षण सतत करत राहिले पाहिजे. ध्यानामधून तुमच्या चैतन्य-लहरी वाढतात व आत्मपरीक्षण केल्यावर

स्वतःमधील दोष दूर होतात. म्हणून नेहमी स्वतःकडे पहात चला, दुसऱ्यांकडे पाहून त्यांचे दोष दाखवण्यात काही फायदा नाही. स्वतःकडे बघताना मला राग का आला, मी क्षमा का करू शकत नाही, माझ्याकडून फक्त प्रेमच का व्यक्त होत नाही इ. गोष्टी बघत चला. हे स्वतःला दोषी समजणे नव्हे तर साक्षीभाव ठेऊन आत्मावलोकन करणे आहे. मग तुम्ही स्वच्छ, निर्मळ होता आणि कुण्डलिनी तुमच्यासाठी सर्व मदत करते. कशाच्या मागे- अधिकार, पैसा, सत्ता इ- लागण्याची तुम्हाला जरूर उरत नाही; जे मिळाले आहे त्यात समाधानी राहता. हीच सहजावस्था व त्या स्थितीला आलात की सर्व देवींची शक्ति तुमच्या पायाशी तत्परतेने येतात व तुमचा पूर्ण सांभाळ करतात.

ध्यान आणि आत्मपरीक्षण सतत करत तुम्हाला प्रगति करायची आहे. सहजयोग्याला दुसऱ्यावर रागावण्याची, नाराज होण्याची जरूर नाही, उलट फक्त प्रेम आणि आनंदाचे आदान-प्रदान करायचे असते. अशी स्थिति मिळाली की तुम्हाला प्रत्येक वस्तू व व्यक्तीमधील सुप्त सौंदर्य समजते. सौंदर्य लक्षात घेण्याचे समजले की तुम्ही पण अधिकाधिक सुंदर बनत जाता व त्याचा आनंद अनुभवता. मग याच सौंदर्याचा व मधुरतेचा आविष्कार तुमच्या जीवनामधून होत राहतो. अशी तुम्ही प्रगति करत राहिलात तर साऱ्या मानवजातीचे परिवर्तन घडून एक सुंदर जग बनवण्याचे माझे स्वप्न साकार होईल.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

